द्वितीय अध्याय

महीप सिंह का जीवन तथा साहित्य परिचय

* **प्रस्तावना**

2.1 महीप सिंह का जन्म और मृत्यु

2.2 महीप सिंह की शिक्षा-दिक्षा

2.3 महीप सिंह का दाम्पत्य जीवन

2.4 महीप सिंह का रहन-सहन, आचार-विचार और व्यक्तिव

2.5 महीप सिंह की लेखन प्रेरणा व पहली रचना

2.6 महीप सिंह के जीवन को प्रभावित करनेवाली घटनाएँ

2.7 महीप सिंह का साहित्य एवं कृतित्व

2.8 महीप सिंह के विविध साहित्य

2.9 महीप सिंह को मिलने वाले सम्मान एवं पुरस्कार

2.10 महीप सिंह की विदेश यात्राएँ एवं अन्य कार्य

2.11 महीप सिंह की संचेतना सफर

* **निष्कर्ष**

* **संदर्भ ग्रंथ-सूची**

द्वितीय अध्याय

महीप सिंह का जीवन तथा साहित्य परिचय

*** प्रस्तावना**

"कॉलेज के सब अध्यापक विस्मत थे कि एक सिख लड़का हिन्दी में दक्ष कैसे हैं। इस अकारण विस्मय से महीप सिंह को जिन्दगी भर जूझना पडा है। पंजाबी अज्ञेय और पंजाबी यशपाल तो हिन्दी के लेखक हो, समझ में आ सकता है, लेकिन केशधारी महीप सिंह ?**"1**

- सुरिन्दर सिंह

"मैं मध्य वर्ग का व्यक्ति हूँ, तो उस वर्ग में व्यक्ति के स्तर पर, समाज और समूह के स्तर पर जो परिवर्तन आ रहा है, उस वर्ग की मानसिकता के जो अलग-अलग शेड हैं, उस पर लिखना मुझे अच्छा लगता है।**"2**

- महीप सिंह

किसी भी रचनाकार का साहित्य जगत खुद के जीवन प्रसंगों से प्रभावित हुए बिना नहीं लिखा जाता। रचनाकार अपने निजी अनुभव, सोच, दृष्टि आदि स्वानुभव साहित्य में जाने अनजाने निरुपित कर देता है। इसीलिए किसी रचनाकार के साहित्य को समझने परखने और विश्लेषित करने के लिए उनके जीवन से संबंधित परिस्थितियों का जानना आवश्यक प्रतीत होता है। लेखक के जीवन या साहित्य से संबंधित परिस्थितियाँ उनके मानस और दृष्टि को समझने में मदद करती है।

लेखक अपने युग के प्रति अपनी दृष्टि आने वाले पीढ़ियों को देता है। यहां महत्वपूर्ण है एक तो वह युग जिसमें वह पैदा हुआ है और दूसरे वह दृष्टि जो उसने इस युग में जीत हुए अर्जित की है। दूसरे शब्दों में किसी लेखक ने अपने देश और काल को जिस तरह समझा है वह उसके साहित्य में झलकता है। इसीलिए इस उतर आधुनिकता के टेक्स्ट प्रधान आलोचना के दौर में भी किसी लेखक के साहित्य को समझने, परखने और विश्लेषित करने के लिए उसके अपने मानस को और उसकी देश और कालगत परिस्थितियों को जानना आवश्यक प्रतीत होता है और यह आवश्यकता सदा ही प्रतीत होती रहेगी।

2.1 महीप सिंह का जन्म और मृत्यु

डॉ.महीप सिंह का जन्म 15 अगस्त 1930 को उत्तर प्रदेश के जिल्ला के अजगैन तहसील के 'नयी सराय' गाँव के एक सिख परिवार में हुआ था। उनके पिता साधारण से एक व्यापारी थे। उनका एक छोटा-सा कपड़ा बेचने का व्यवसाय था। वे नयी सराय गाँव में सन 1922 में झेलम के पास से जिल्ला गुजरात से आकर बसे थे। इससे पहले वे जिल्ला गुजरात (अब पाकिस्तान में) से सिर्फ कपडा बेचने के लिए व्यवसाय के लिए जिल्ला उन्नाव में आते-जाते रहते थे। वे इतने विशाल ह्रदय के व्यक्ति थे कि जिल्ला उन्नाव के गामिण किसानों को कपड़ा उधार ही दे जाते थे और फसल की पैदावार पर ही उन्हें उधार के पैसे मिल पाते थे। परन्तु उन्हें यह पांच-छ: महीने का समय खलता नहीं था। वे इस इलाके के लोगों के व्यवहार से खुश थे तथा जिल्ला उन्नाव के विशेष रूप से नयी सराय गाँव के लोग भी उनसे अत्यन्त खुश थे तथा और शायद इसी प्यार ने उनको हमेशा के लिए नयी सराय गाँव का बना लिया। परन्तु आठ-नौ साल बाद ही बच्चों की पढ़ाई का ख्याल कर वहाँ से कानपुर आ बसना पड़ा। महीप सिंह के पिताजी के भाई और बहन भी

यही आ गए थे। महीप सिंह के पूर्वजों की जड़ें आज के पाकिस्तान के हिस्से में चले गए पंजाब के जिल्ला गुजरात के गाँव सराय आलमगीर में है। इनके पिता के चचेरे भाई विभाजन के समय वहीं रहते थे और उन्होंने इस विभीषिका में परिवार के दो पुरुष सदस्यों को भी खोया।

24 नवंबर 2015 (भारत) सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ.महीप सिंह का 24 नवंबर को दोपहर में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। महीप सिंह गुड़गांव की पालम विहार कॉलोनी में अपने बेटे संदीप सिंह के साथ रहते थे। 85 वर्षीय महीप सिंह मेट्रो अस्पताल में भर्ती थे।

2.2 महीप सिंह की शिक्षा-दीक्षा

महीप सिंह अपने माता-पिता के संतान में पांच भाई-बहनोें में से चौथे थे। उनके अलावा दो भाईओं ने साईकिल-पार्ट्स से संबंधित कारोबार शुरू किया। जबकि महीप सिंह कॉलेज में प्राध्यापक और बड़े लेखक बनना चाहते थे। महीप सिंह की प्राथमिक स्तर से लेकर एम.ए. तक की शिक्षा कानपुर में हुई। उन्होंने सन 1954 में डी.ए.वी. कॉलेज कानपुर में एम.ए. की पढ़ाई के दौरान ही साहित्य लिखने की शुरुआत कर दी थी। दरअसल महीप सिंह ने सिख होते हुए भी हिन्दी साहित्य को इसलिए चुना कि वे गुरु गोविंद सिंह का दार्शनिक चिंतन कर गुरु गोविंद सिंह के साहित्य की उचित पहचान और रथयात्रा दिलाना चाहते थे। परिणामतः 1963 ई. में आगरा विश्वविद्यालय से 'गुरु गोविंद सिंह और उनकी कविता' शोधकार्य संपन्न कर पी.एच डी. की डिग्री प्राप्त की। व्यापार ही इनका पुश्तैनी धन्धा रहा। परन्तु इन्होंने अपने पुश्तैनी व्यवसाय को छोड़कर अध्यापन को ही तरजीह दी। इस संदर्भ में उनका मानना है वर्षों पूर्व एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के प्रशचात मैं अनिर्णय के दोराहे पर खड़ा था। हमारे परिवार में पीढ़ियों से व्यापार ही होता आया था। व्यापारी

बनने के लिए बड़ी-बड़ी डिग्रियों का विशेष महत्व नहीं होता इसलिए मैट्रिक की परीक्षा पास करते ही मुझसे यह अपेक्षा की जाने लगी थी कि जल्दी ही मैं अपने पारिवारिक व्यापार संगठन का एक अंग बन जाऊँगा। इसलिए जिस दिन अनिर्णय के दोराहे पर खड़े होकर एक निर्णय की दिशा की ओर टकटकी लगाये हुए मैंने घोषित किया कि मैं अध्यापक बनूँगा, उस दिन मेरे परिवार के अधिकतर वरिष्ठ सदस्यों पर आश्चर्य, निराशा, क्षोभ और पता नहीं किन-किन भावों की मिली-जुली प्रतिक्रिया हुई थी। इस प्रकार **"**मैंने अध्यापन कार्य किसी मजबूरी में नहीं, बल्कि स्वेच्छा से चुना। वर्षो पहले मैनें एक व्यापारी के पुत्र से अध्यापक बनना चाहता था। आज मेरा बेटा, एक अध्यापक का पुत्र, एक व्यापारी बनने की राह पर चल पड़ा है।**"3**

इस तरह कहानीकार ने वंश-परम्परा के व्यवसाय के विरुद्ध अध्यापन का कार्य जून 1955 में खालसा कॉलेज बम्बई से प्रारंभ किया। खालसा कॉलेज में इनकी हिन्दी प्राध्यापक के पद पर नियुक्ति हुई तथा वहाँ पर अगस्त 1963 तक यानी कि आठ वर्ष तक अध्यापन किया। इस अवधि ने उन्हें रचनाकार के रूप में परिपक्व बनाया और विविध अनुभवों से समुद्र किया। महानगर के जीवन से उनका वास्तविक परिचय बम्बई वास के दौरान ही हुआ। इसके बाद अगस्त 1963 में बम्बई छोड़कर दिल्ली आए तो यहाँ पर वे श्री गुरु तेगबहादुर खालसा कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय के अंतर्गत) में प्राध्यापक के पद पर नियुक्त हो गए। बीच में एक वर्ष के लिए वे कानसाई विश्वविद्यालय हीराकाता (जापान) में अतिथि प्राध्यापक रहें। वहाँ उन्होंने विश्वविद्यालय के लिए सामाजिक परिवर्तन और समसामयिक भारतीय साहित्य विषय पर लघु-प्रबंध लिखा। यही से सन 1993 में रीडर के पद से सेवा-निवृत्ति ले ली। महीप सिंह जी अपने अध्यापन व्यवसाय से इस क़दर संतुष्ट है कि इस जैसा क्षेत्र

किसी को मानते ही नहीं, "संसार का ऐसा शायद ही कोई व्यवसाय हो जो व्यक्ति को इस तरह चिर-युवा होने का निरन्तर अहसास देता हो। यह बात भी कुछ कल तृप्ति नहीं देती कि अचानक आपके सम्मुख कभी सेना का कोई अधिकारी, कभी पुलिस अफ़सर अथवा कभी गले में स्टैथौस्कोप डाले, सफेद कोट पहने कोई डॉक्टर आ जाए और कहे..... सर आपने मुझे पहचाना नहीं..... मैं अमुक सन में..... आपका विधार्थी था। ऐसी स्थिति में किसी भी अध्यापक को ऐसा लगेगा जैसे उसकी जीवन-भर की संचित पूँजी इस एक चेहरे में आकर इकट्ठा हो गई है। इस प्रकार महीप सिंह अपने अध्यापन एवं लेखन के कार्य से अत्यंत सन्तुष्ट है।"**4**

2.3 महीप सिंह का दाम्पत्य जीवन

महीप सिंह के लग्न जीवन की शुरुआत 20 नवम्बर 1953 को 23 साल की आयु में सुरजीत कौर के साथ हुई। उनकी पत्नी सुरजीत कौर सुशील और समर्पित जीवन-संगनी बनकर महीप सिंह के कार्य को सदैव समर्थन और प्रोत्साहित करती रही है। इनका भरा पूरा परिवार है। इनके एक बेटी और दो बेटे के रूप में तीन संतान हैं। बेटी का नाम पप्पू और बड़े बेटे का नाम जयदीप छोटे बेटे का नाम संदीप था। बेटी शादी-शुदा है और अपनी ससुराल में पति के धर पर खुशहाली से है। उनका बड़ा बेटा एम.बी.ए. करने के बाद कनाडा में और छोटा बेटा दिल्ली में अपने पिता द्वारा स्थापित अभिव्यंजना प्रकाशन और संचेतना पत्रिका में बड़ा सहयोग देते हुए अपना कारोबार चलाता है। महीप सिंह अपने दोनों बेटों के व्यवसाय से खुश हैं। महीप सिंह की खुशहाली भरी जिन्दगी के पीछे पत्नी श्रीमती सुरजीत कौर का बहुत बड़ा योगदान है। दोनों पति-पत्नी दाम्पत्य जीवन का सुन्दर आदर्श समाज के सामने रखा है। उनकी पत्नी

सुघड़ गृहिणी है और उनका गृहस्थ जीवन सुशील एवं समर्पित जीवन संगिनी के साथ बहुत शांत और सन्तुष्ट चलता रहा है।

2.4 महीप सिंह का रहन-सहन, आचार-विचार और व्यक्तित्व

महीप सिंह का रहन-सहन बड़ा सादगीपूर्ण है। महानगरीय परिवेश से संबंध रखते हुए भी ज्यादा तड़क-भड़क से रहना उन्हें पसन्द नहीं है। बातचीत करने का ढंग सरल, संक्षिप्त व तार्किक है। दोस्ती महीप सिंह की सबसे बड़ी कमज़ोरी और सबसे बड़ी शक्ति है। इनकी पक्की दोस्ती के विषय में डॉ.कन्हैयालाल नन्दन का मानना है कि - "एक बार उनके एक परम मित्र ने ओछा काम किया जिसका आभास उन्हें था। मैंने उसे नाक़ाबिले बर्दाश्त मानकर फोन पर रेखांकित कर दिया। महीप भाई मैं ऐसा घटियापन बर्दाश्त नहीं कर पाता। तुम्हें चाहूँ, तुम्हारे चाहने वालों को भी चाहूँ..... और ऐसे चाहने वाले और ऐसी दोस्ती तुम्हें मुबारक हो। बड़े संजीदा होकर बोले थे महीप नंदन मैं तुम्हारे दस घटिया दोस्त ढोने का वायदा करता हूँ। तुम इस समय मेरा एक घटिया दोस्त ढोने का वायदा कर लो। इसके बाद मेरे पास कुछ कहने को नहीं था। मैं उनके दोस्त को आज तक ढो रहा हूँ।"**5** इस प्रकार उन पर 'यारों का यार' वाली कहावत चरितार्थ होती है।

कानपुर जैसे असंस्कृत औद्योगिक शहर में रहते हुए भी उनका व्यक्तित्व अत्यंत सुसंस्कृत है। असंस्कृत भाषा से उन्हें सख़्त परहेज है। जो लोग असंस्कृत भाषा का प्रयोग करते हैं, उन पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने कहा है, मुझे यह 'लगता है कि गाली हमारी' संस्कृति का जैसे अभिन्न अंग बन गया है। "मुझे नहीं लगता कि हमारे प्राचीन अथवा मध्ययुगीन साहित्य में इनकी कितनी झलक मिलती है।..... यहाँ तो लोग हँसते-खेलते, उठते-बैठते, सोते-जागते, गप-शप, करते इस तरह

गोलियों का प्रयोग करते हैं, जैसे यह उनके व्यक्तित्व का अविच्छुनन भाग हो। उनके लिए गाली बकते रहना इतना ही सहज और स्वाभाविक होता है जैसे सांस लेना या प्यास लगने पर पानी पी लेना।..... प्राध्यापकों को मैने ऐसी मोटी-मोटी गालियाँ बकते सुना है, जिनके सामने होली के अवसर पर गालियाँ बकने वाले भी शर्मा जाएँगे।..... स्कूल में पढ़ने वाले अबोध बच्चों से लेकर बड़े-बूढों तक सामान्य-जन से लेकर बड़े-बडे राजनेताओं तक, झुग्गियों से लेकर महलों तक इसका पसार है।**"6**

महीप सिंह जी में एक तटस्थ व्यक्तिव दिखाई पड़ता है। साहित्य क्षेत्र में एक-दूसरे की अच्छाई-बुराई तो होती ही रहती है। कई आलोचक प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से क्रोधित होकर गोलियों की झडी तक लगा देते हैं, परन्तु जब महीप सिंह जी को इस तरह की स्थिति का सामना करना पड़ता है, तो इनका जवाब सदा सुसंस्कृत ही होता है। एक बार की ऐसी ही स्थिति का वर्णन करते हुए महीप सिंह ने कहा है **"**संसार में शायद ही कोई व्यक्ति हो जिसे कभी न कभी गाली की सौगात न मिली हो। मुझे भी बहुत से शुभचिंतक प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से यह भेंट देते हैं। प्रायः मेरा एक ही उत्तर होता है - आप जो अमूल्य भेंट मुझे दे रहे है, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। किन्तु इस भेंट को स्वीकार कर सकूँ उतनी सामर्थ्य मुझमें नहीं है। इसलिए इसे मैं आपको लौटा रहा हूँ। यह भेंट यदि आपको प्रिय है तो कृपया इसका उपयोग स्वंय कर लीजिए।**"7** इस प्रकार महीप सिंह अपने ऊपर दोषारोपण या आलोचना करने वालों के साथ भी बड़ी आत्मीयता से बातचीत करते हैं। वे आत्म-प्रशंसा के भी इच्छुक नहीं है।

महीप सिंह जी स्वतंत्र प्रकृति के व्यक्ति है। महीप सिंह अपने स्कूल के दिनों से ही 'राष्ट्रीय' स्वयंसेवक संघ' मे सक्रिय भाग लेने लग गए थे। परन्तु धीरे-धीरे उन्हें वहाँ बौद्धिक स्वतंत्रता का अभाव अखरने

लगा। सन् 1950-55 का दौर मे पंजाब में हिन्दुत्व की संकीर्ण अवधारणा के तहत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और जनसंघ ने पंजाबी भाषा का जो विरोध किया, उसके कारण उनसे उनका मतभेद हो गया। इसलिए महीप सिंह ने संघ की जकडन से स्वंय को स्वतंत्र कर लिया। यह और बात है कि बाद में संघ जनसंघ ने पंजाबी भाषा के विषय में अपनी गलती को सुधारते हुए महीप सिंह की लाइन को ही स्वीकार किया। इस बात से अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क ने महीप सिंह के नेतृत्व को उभारा, संगठन का सलीका सिखाया और सोच को व्यापकता दी। परन्तु संघ में रहने से उसका नकारात्मक पक्ष यह हो सकता था कि उनकी स्वतंत्र-चिन्तन क्षमता समाप्त हो जाती।

महीप सिंह जी अपने ही जीवन में नहीं कि्सी दूसरे के जीवन में भी किसी की दख़लअंदाज़ी नहीं चाहते। साहित्य के क्षेत्र में बढती गिरोहबाजी या माफ़िया पर चिंता व्यक्त करते हुए कहते है, "साहित्य में भी अब एक माफ़िया पैदा हो गया है, जिसके कारण अच्छे कथाकारों को उपयुक्त मंच नहीं मिल पा रहा है। पहले के मुकाबले कवि, कथाकार या कहानीकार कमजोर पड़ गए हो ऐसी बात नहीं है। स्तरीय लेखन अब भी हो रहा है, लेकिन साहित्य में एक गिरोह के वर्चस्व के कारण नए कथाकारों को उचित स्थान नहीं मिल पा रहा है। इससे साहित्य का भी नुकसान हो रहा है। पहले साहित्य में विभिन्न लेखकों की विचारधारा के अनुरूप गुटबाज़ी तो थी लेकिन गिरोहबाजी नहीं थी।"**8** महीप सिंह ने अपने एक अन्य लेख में कहा है "देश के सभी तंत्रों की तरह साहित्य भी आज एक तंत्र बन गया है। इससे व्यक्ति को धन और ख्याति तो मिलती ही है, कई बार सरकारी अथवा गैर सरकारी संस्थाओं की कृपा भी प्राप्त हो जाती है। साहित्य जगत में गुट तो हमेशा से ही रहे है। चिंतनीय स्थिति तब आती है जब गुट गिरोह में बदल जाते है। साहित्य

को इस गिरोहबंदी से बहुत हानि पहुंच रही है। पिछले 20-25 वर्षों में साहित्यिक गिरोहबंदी ने सरकारी एवं गैर सरकारी तंत्रो पर अपना कब्ज़ा जमाना शुरू किया।"**9** इस प्रकार जो 'माफ़िया' शब्द अपराध जगत् का अटूट हिस्सा था, अब वह राजनीति के रास्ते से सरस्वती के पुजारियों के बीच पहुँच कर अपना असर दिखाने लगा है। महीप सिंह जी ने साहित्य के लिए यह प्रारम्भ से ही निष्पक्ष विचारों के रहे है। अतः वे साहित्य में ऐसी स्थिति को स्वीकार करने के पक्ष में नहीं है।

2.5 महीप सिंह की लेखन प्रेरणा व पहली रचना

महीप सिंह जी में लेखन-प्रेरणा स्वत: ही पैदा हुई है, क्योंकि परिवार में भी कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो उन्हें लेखन के लिए प्रेरित करता। हां लेखन कार्य में इन्हें अपनी धर्मपत्नी का काफी सहयोग मिला है। शरत साहित्य का प्रभाव इनके व्यक्तिव पर काफी हद तक स्वीकार किया जाता है। ये प्रारंभ से ही इन्हें पढ़ते आए है। परन्तु बाद में रुचि लेखक चेखव का भी प्रभाव इनके व्यक्तिव पर पड़ा है।

इनके लेखन का सिलसिला स्कूल के दिनों से शुरू हो गया था, जब ये आठवीं कक्षा में पढ़ते थे, तब इनकी एक कहानी कानपुर से निकलने वाले किसी पत्र मे छपी थी। दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात तो ये निरन्तर लिखते रहे। उन्ही दिनों महीप सिंह ने एक पत्रिका 'देसमेश' का सम्पादन भी किया। शुरू-शुरू में उन्होंने ऐतिहासिक कहानियाँ लिखी जिन पर आदर्शवाद का गहरा रंग था। लेकिन शीघ्र ही समकालीन सामाजिक विषय उन्हें आकर्षित करने लगे। 1950 मे इन्होंने पंजाब की भाषा समस्या पर अनेक लेख लिखे। हालांकि पंजाबी भाषा का ज्ञान इन्होंने घर पर ही अपने पारिवारिक माहौल से प्राप्त किया है।

'मैडम' कहानी को इनकी प्रथम रचना माना जाता है। जो इन्होंने सन 1956 में लिखी थी और सन 1957 में 'सरिता' में प्रकाशित हुई थी। इनकी दूसरी कहानी 'उलझन' इनकी प्रथम कहानी 'मैडम' से पहले प्रकाशित हो गई थी। इनकी 'उलझन' कहानी को उन दिनों "साप्ताहिक हिन्दुस्तान" द्वारा आयोजित प्रेमचन्द कहानी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला था।

महीप सिंह जी ने अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि की सीमाओं का अतिक्रमण करके अध्यापन व लेखन के क्षेत्र को चुना था। क्योंकि उनसे पहले परिवार में किसी ने भी इतनी उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की थी, न ही कोई लेखक था और न ही किसी की सार्वजनिक जीवन में कोई भागीदारी रही थी। सभी लोग व्यापार को ही महत्व देते रहे है। परन्तु महीप सिंह जी ने लक्ष्मी जी की अपेक्षा सरस्वती को ही अपना आराध्या समझा। लेखन के विषय में महीप सिंह जी के कहना है **"**लिखना मेरे लिए एक अजीब तरह की यातना है -एक ऐसी यातना जो मुझे सदा पीड़ित किए रहती है। मुझे लगता है कि मैं सदा अशांत रहता हूँ। जब नहीं लिखता हूँ, तो अशांत होता हूँ, जब लिख रहा होता हूँ तों लगता है, उस अशांति को धीरे-धीरे पी रहा हूँ या ऐसा लगता है कि अन्दर की दबी हुई अशांति उफन आई है। और उसने मुझे चारों ओर से घेर लिया है।**"10**

2.6 महीप सिंह के जीवन को प्रभावित करनेवाली घटनाएँ

बदलती राजकीय परिस्थितियों एवं व्यक्तिगत संघर्ष ने महीप सिंह की मानसिकता को उद्वेलित किया है। महीप सिंह का रचनात्मक साहित्य कुछ हद तक व्यक्तिगत संघर्ष, तनाव और वेदना को प्रस्तुत करता है। महीप सिंह अपने आस-पास घटित घटनाओं के प्रति बड़े संवेदनशील से दिखाई देते है। **"**1947 में देश का विभाजन हुआ। उसके

पूर्व के सांप्रदायिक दंगों की रोमांचकारी स्मृतियाँ भी मेरे मानस में है।**"11** देश विभाजन के साथ पंजाब विभाजन सांप्रदायिक दंगे और सांप्रदायिक संकुचितता आदि बातो ने उनके मानस पर गहरा प्रभाव छोडा है। 'पानी और पुल', 'दिल्ली कहां है ?' और 'आओ हँसे' जैसी कहानियाँ में भारत विभाजन की व्यथा को अभिव्यक्त मिली है। महीप सिंह का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में सक्रिय रुप से कार्यकर्त्ता के रूप में सम्मिलित होने की खास वजह भी देश विभाजन की घटना हो रही है।

1984 के आपरेशन ब्लू स्टार और श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के बाद महीप सिंह और उनके परिवार को संघर्ष झेलना पड़ा था। **"**उस समय महीप सिंह और उनके परिवार ने बहुत कुछ सहा। कानपुर में उनके भाइयों का घर लुट लिया गया।**"12** श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के बाद देश के कुछ भागों में सिख समाज के प्रति असामाजिक तत्वों द्वारा अमानुषी अत्याचार किये गये। उस समय समुदाय को देश की धर्मनिरपेक्षता लोकतंत्र और संविधान से विश्वास खो गया। ऐसे अवसर पर महीप सिंह ने अपने साथियों के सहयोग से 'सिख फोरम' बनाकर सिख समुदाय में विश्वास संपादन करने का सफल प्रयास किया था।

हिन्दी साहित्य जगत में महीप सिंह को संचेतन रचनाकार की पहचान 'संचेतना' पत्रिका ने प्रदान की है। सर्वप्रथम आधार पत्रिका में संचेतन कहानी विशेषांक (1966) का प्रकाशन और उसके साथ ही महीप सिंह का साहित्य जगत में प्रसिद्ध पाना अपने आप में एक घटना ही मानी जाएगी। आगमन समय नयी कहानी आंदोलन की प्रवृतियों का बड़ा प्रभाव था। 1966 से संचेतना पत्रिका का प्रकाशन उनके जीवन में एक अविस्मरणीय घटना का स्थान रखता है।

महीप सिंह का व्यक्तित्व बहुआयामी ज़रूर है, लेकिन उनकी प्रतिभा विडंबनाओं, विसंगतियों और संघर्ष से लिप्त प्रतिभाषित होती है। उन्होंने जीवन में किसी भी वक्त संघर्ष से भागने या मुंह मोड़ने का प्रयास नहीं किया बल्कि वे सदैव चुनौतियों और जोखम उठाने को तत्पर रहे है। उनके जीवन में कई जानलेवा घटनाएँ भी घटित हुई है। मौत को मात देकर जीवन जीने की दृढ इच्छा शक्ति ही उनके व्यक्तित्व की पहचान रही है। 1990 में एशियन कल्चर फोरम ओन डवलपमेंट चाडलैड आयोजित, धार्मिक मूलवाद की चुनौतियों, संगोष्ठी में अंतिम दिन उन्हें दिल का दौरा पड़ा था। तब उन्हें आई.सी.यू. के भीतर ऑक्सीजन और ग्लूकोज लगाकर सारवार की गई थी। यह घटना उनके लिए नया जीवन पाने के बराबर है।

दिल के दौरे के ठीक एक साल बाद 1991 में पीलीभीत से दिल्ली लौटते समय हायुड के पास ट्रक ने उनकी गाड़ी को टक्कर मारी जिसमें ड्राइवर की उसी समय मृत्यु हुई थी। दुर्घटना इतनी खतरनाक थी कि उनकी गाड़ी की हालत देखकर लगता था कि उसमें यात्रा करनेवालो में से किसी की जान बचने की उम्मीद नहीं थी। लेकिन लेखक के अलावा साथ में यात्रा करनेवाले जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा, और रणधीर सिंह छतवाल तीनों का चमत्कारिक बचाव हुआ। इसके बाद भी उन्होंने स्कूटर अकस्मात का सामना किया था और बुरी तरह से जख़्मी होना पड़ा था। 2004 में महीप सिंह जोगिडस रोग से प्रभावित हुए थे। जिसके चलते उनके लीवर में मवाद जैसे मुद्दा एकत्र हो गया था। इसकी सारवार के बाद उनके स्वास्थ्य में बड़ी कमज़ोरी पाई गई है।

इस प्रकार महीप सिंह के जीवन एवं स्वास्थ्य संबंधित घटनाएँ उनके मक्कम इरादों की पहचान करवाती है। उनके व्यक्तित्व की पहचान "डॉ.महीप सिंह के व्यक्तित्व में भी एक नहीं पाँच दरियाओं के पानियों

की खानी है। वे एक बेचैन, सकिय और सृजनशील रूह के धारक है। खानी उनका धर्म और चुनौती स्वीकारना उनका स्वभाव है।"**13**

2.7 महीप सिंह का साहित्य एवंम कृतित्व

महीप सिंह का हिन्दी साहित्य में आगमन के समय नयी कहानी का प्रभाव चल रहा था। उस समय युवा साहित्यकार या सामान्य साहित्यकार का साहित्य जगत में अपनी पहचान बनाना बड़ा ही कठिन था। दूसरी बात यह भी सोचनीय है कि नयी कहानी का जड़ता से मुक्ति पाकर कहानी में सचेतन दृष्टि की सक्रियता को महत्व दिया। परिणामतः सचेतन कहानी आंदोलन का प्रादुर्भाव हुआ, जिसके प्रवर्तन का संपूर्ण क्षेय महीप सिंह को जाता है। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टि एवं जागरूकता को संचेतना कहते है, यही महीप सिंह की कहानियाँ का मंत्र साबित हुआ है।

महीप सिंह ने विधार्थी जीवन के दौरान साहित्य यात्रा की शुरुआत कर दी थी। "लिखने की अभिरुचि बहुत प्रारंभ से थी। सिख इतिहास मुझे बहुत सम्मोहित करता था। दसवीं कक्षा में पढ़ते समय उन्होंने एक ऐतिहासिक कहानी लिखी थी 'आदर्श इच्छा'। उसके बाद कई छोटी-छोटी ऐतिहासिक कहानियाँ लिखी। कॉलेज में आया तो पत्र-पत्रिकाओं के लिए कुछ लेख भी लिखने लगा।"**14** श्री अटल बिहारी वाजपेयी संपादित 'पांचजन्य' पत्रिका में सन 1950 में पंजाब की भाषा समस्या पर एक लेख लिखा था। तब वे कॉलेज में अभ्यास करते थे।

महीप सिंह की साहित्य जगत में पहचान कहानी लेखन के द्वारा हुई है। उनकी पहली कहानी 'उलझन' को 1956 में 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' द्वारा आयोजित प्रेमचन्द प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार के साथ स्थान

मिला था। वैसे 'उलझन' से पूर्व 'मैडम' कहानी लिखी गई थी, लेकिन वह कहानी प्रकाशित बाद में हुई थी।

महीप सिंह के अब तक प्रकाशित हुई कहानी-संग्रहों का प्रकाशन इस प्रकार है -

(1) सुबह के फूल - सन् 1959 में प्रकाशित

(2) उजाले के उल्लू - सन् 1964 में प्रकाशित

(3) घिराव - सन् 1968 में प्रकाशित

(4) कुछ और कितना - सन् 1973 में प्रकाशित

(5) मेरी प्रिय कहानियाँ - सन् 1974 में प्रकाशित

(6) भीड़ से घिरे चेहरे - सन् 1977 में प्रकाशित

(7) कितने सम्बन्ध - सन् 1979 में प्रकाशित

(8) इक्यावन कहानियाँ - सन् 1980 में प्रकाशित

(9) महीप सिंह की चर्चित कहानियाँ - सन् 1994 में प्रकाशित

(10) सहमे हुए - सन् 1998 में प्रकाशित

महीप सिंह की अब तक की सभी कहानियाँ तीन खंड में विभाजित किया गया है। जो तीनों खंड में सारी कहानियाँ सन् 2002 में प्रकाशित की गई है।

खंड - 1 सुबह की महक

खंड - 2 क्षणों का संकट

खंड - 3 संबंधों का सन्नाटा

यह तीन कहानी-संग्रह महीप सिंह के कथा-साहित्य के अध्येता संशोधक के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगें ।

महीप सिंह की कहानी यात्रा को उनके समय परिवेश एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर तीन चरण में विश्लेषित किया जा सकता है। पहले चरण के अंतर्गत 1955 से 1965 तक लिखी गई कहानियों 'सुबह के फूल' (1959) और 'उजाले के उल्लू' (1964) कहानी-संग्रह की कहानियाँ रखी जाती है। पहले चरण की कहानियाँ महीप सिंह ने मुंबई में रहकर लिखी है। इस कालखंड की कहानियाँ पारिवारिक संबंधों को उभारती है। पारिवारिक रिश्तों में तनाव, मूल्य-परिवर्तन, आर्थिक विषमता आदि संदर्भ, व्यापक ढंग से चित्रित हुए है। दूसरे चरण की कहानियाँ का समय दिल्ली में आगमन के बाद का है। इस चरण की कहानियाँ 'घिराव' (1968) और 'कुछ और कितना' (1971) नामक दो संग्रह में उपलब्ध है। इन कहानियाँ की पृष्ठभूमि महानगरीय भागदौड़, स्त्री-पुरुष के संबंध एवं यौन संबंधों पर आधारित है। महीप सिंह की कहानियाँ के तीसरे चरण की शुरुआत 'कितने संबंध' (1979) कहानी-संग्रह से होती है। जो 'धूप की उंगलियों के निशान' (1994) और 'ऐसा ही है' (2002) कहानी-संग्रह में प्रकाशित कहानियाँ तक का रहा है। प्रस्तुत चरण में राजनीति में नकारात्मक बदलाव, व्यक्तिवादिता बढता हुआ भ्रष्टाचार, परस्पर विश्वास का अभाव आदि कथ्य उभरे है।

महीप सिंह की कहानियों का परिवेश एवं बोध मुबंई-दिल्ली जैसे महानगरों पर आधारित रहा है। जिसमें पारिवारिक रिश्ते, समाज, मूल्य नैतिकता, राजनीति आदि पहलू का स्वाभाविक चित्रण पाया जाता है। महीप सिंह साहित्य लेखन की शुरुआत आंदोनकारिता के साथ करते हैं,लेकिन वे धीरे-धीरे उससे बाहर निकलकर अपने साहित्य में व्यक्ति, समाज और संस्कृति की रचनाधर्मिता को आलोकित करते हुए नजर आते है।

महीप सिंह ने ज्यादातर कहानियाँ ही लिखी हैं। कहानियों के अलावा उन्होंने हिन्दी साहित्य को तीन उपन्यास भी प्रदान किये हैं।

(1) यह भी नहीं - 1976

(2) अभी शेष है - 2004

(3) बीच की धूप - 2010

इनमें से पहला उपन्यास 'यह भी नहीं' 1974-75 जापान में विजिटींग प्रोफेसर के समय दौरान लिखा था। दूसरा उपन्यास 'अभी शेष है' दिल्ली की गहमागहमी और व्यस्तताओं से दूर प्रवास पर जाने पर लिखा गया है। ठीक उसी प्रकार तीसरा उपन्यास 'बीच की धूप' भी अवकाश समय यानी निवृत्ति समय में लिखा गया है। तीनों उपन्यास की रचना के लिए महीप सिंह को अपनी व्यस्तताओं से मुक्त होने की आवश्यकता पड़ी है। पहले उपन्यास में महानगरीय जीवन के विविध पक्षों का चित्रण हुआ है। इसमे महानगरीय परिवेश की दौड़ती- भागती जिन्दगी के बीच बनते-बिगडते मानवीय संम्बधों का चित्रण किया गया है। उनके दूसरे उपन्यास 'अभी शेष है' की सारी घटनाएँ दिल्ली महानगर में घटित होती है। प्रस्तुत उपन्यास 1970 से लेकर 1975 तक के काल विशेष में घटित घटनाओं और आपातकाल की घोषणा तक की घटना पर आधारित है। जबकि तीसरा उपन्यास 'बीच की धूप' राजनीति और महानगरीय समस्याओं को प्रस्तुत करता है। महीप सिंह का उपन्यास निर्माण संख्या की दृष्टि तीन तक ही पहुंच सका है, लेकिन ये तीन उपन्यास भी महीप सिंह को उपन्यासकार की प्रतिष्ठा प्रदान करते है। तीन उपन्यास का निर्माण भी उनके लिए उपन्यास क्षेत्र में बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जाएगी।

2.8 महीप सिंह के विविध साहित्य

महीप सिंह की कलम से ज्यादातर कहानी और उपन्यास साहित्य प्रकट हुआ है। बाल साहित्य, जीवनी, निबंध एवं व्यंग्य जैसी विधाएँ भी महीप सिंह से अछूती नहीं रह सकी।

महीप सिंह ने कुल 3 बाल साहित्य लिखे है -

(1) न इस तरफ न उस तरफ

(2) गुरु नानक : जीवन प्रसंग

(3) एक थी संदूकची

उन्होंने ने 4 जीवनी लिखी है -

(1) गुरु गोबिनद सिंह : जीवन और आदर्श

(2) गुरु तेग बहादुर : जीवन और आदर्श

(3) गुरु गोबिनद सिंह : (साहित्य अकादमी के लिए)

(4) स्वामी विवेकानंद

निबंध संग्रह में देखा जाए तो उन्होंने ने एक ही लिखा है -

(1) कुछ सोचा : कुछ समझा - सन् 2002 में प्रकाशित हुआ।

महीप सिंह ने व्यंग्य कथा की भी एक ही रचना की है -

(1) एक नये भगवान का जन्म - सन् 2001 में प्रकाशित हुआ।

इसके अलावा महीप सिंह ने साहित्य, भाषा, विदेशी साहित्य आदि से संबंधित लेख और श्रेष्ठ कहानियों का संपादन जैसे साहित्यिक कार्यो में भी महीप सिंह का योगदान रहा है। उन्होंने ने पंजाबी साहित्य, रिसर्च पेपर और सम्पादित पुस्तकें भी लिखे है।

पंजाबी साहित्य में महीप सिंह ने छ कहानी संग्रह और एक उपन्यास भी लिखा है

(1) काला बाप गोरा बाप (कहानी संग्रह) सन् 1970 में प्रकाशित

(2) मौत दा इक दिन (कहानी संग्रह) सन् 1979 में प्रकाशित

(3) किहडे रिश्ते (कहानी संग्रह) सन् 1982 में प्रकाशित

(4) सहमे हुए (कहानी संग्रह) सन् 1984 में प्रकाशित

(5) पहला वरगे दिन (कहानी संग्रह) सन् 1996 में प्रकाशित

(6) महीप सिंह दीयां इकवंजा कहानियाँ (कहानी संग्रह) सन् 2002 में प्रकाशित

(7) एह वी नहीं (उपन्यास) सन् 1977 में प्रकाशित

रिसर्च पेपर

महीप सिंह ने तीन सौ से अधिक रिसर्च पेपर हिन्दी, पंजाबी एवं अंग्रेजी भाषाओं में है।

महीप सिंह की कुल चार सम्पादित पुस्तकें प्रकाशित हुई है -

(1) सचेतन कहानी : रचना और विचार

(2) पंजाबी की प्रतिनिधि कहानियाँ

(3) गुरु नानक और उनका काव्य

(4) विचार कविता की भूमिका

वस्तुत : महीप सिंह ने हिन्दी साहित्य को विशिष्ट दृष्टि प्रदान की है। महीप सिंह ने संचेतना पत्रिका के माध्यम से अवहेलित साहित्यकार जो वास्तव में प्रतिभाशाली युवा साहित्यकार थे, उनको एक मंच प्रदान

किया है। उन्होंने अपनी मौलिक सृजनात्मक के द्वारा तो चमत्कार बताया ही है।

2.9 महीप सिंह को मिलने वाले सम्मान एवं पुरस्कार

महीप सिंह ने साहित्य में जो योगदान दिया है इस के चलते उनको सम्मान एवं पुरस्कार मिला है। जो निम्नलिखित है -

महीप सिंह को कुल मिलाकर दस सम्मान मिला है -

(1) वर्ष 1986 में भाषा विभाग (पंजाब) द्वारा शिरोमणि साहित्यकार के रूप में सम्मानित।

(2) वर्ष 1990 में संत निधान सिंह केसर मेमोरियल सम्मान कथा साहित्य में योगदान के लिए।

(3) वर्ष 1990 में हिन्दी साहित्य में विशेष योगदान के लिए अदीब इंटरनेशनल साहिर सम्मान।

(4) वर्ष 1992 में पंजाबी साहित्य में विशिष्ट योगदान के लिए डॉ.साधू सिंह हमदर्द सम्मान।

(5) वर्ष 1994 में हिन्दी प्रचारिणी समिति, कानपुर द्वारा साहित्य भारती (अलंकरण) से सम्मानित।

(6) वर्ष 1999 में छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन (लंदन) में हिन्दी भाषा और साहित्य में विशिष्ट योगदान के लिए सम्मान।

(7) वर्ष 1999 में इंडो कैनेडियन टाइम्स ट्रस्ट, सरी (कनाडा) द्वारा पंजाबी पत्रिका में विशिष्ट योगदान के लिए विशेष सम्मान।

(8) वर्ष 1999 में राष्ट्रीय हिन्दी परिषद्, मेरठ द्वारा हिन्दी रत्न उपाधि से सम्मानित।

(9) वर्ष 2000 में इंस्टीट्यूट ऑफ पंजाबी लैंगुएज एण्ड कल्चर (लाहौर) द्वारा 'अवार्ड ऑफ डिस्ट्रिक्शन' सम्मान।

(10) वर्ष 2000 में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा राष्ट्रपति के हाथों हिन्दी के विकास तथा प्रसार में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए 'प्रशस्ति-पत्र' द्वारा सम्मानित।

महीप सिंह को कुल सात पुरस्कार प्राप्त हुए है -

(1) वर्ष 1965 एवं 1969 में भाषा विभाग (पंजाब) द्वारा वर्ष का श्रेष्ठ कथा साहित्य के रूप में 'उजाले के उल्लू' और 'घिराव' कहानी संग्रह पुरस्कृत।

(2) वर्ष 1966 में 'उजाले के उल्लू' कहानी संग्रह के लिए केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा पुरस्कृत।

(3) वर्ष 1971 एवं 1989 में हिन्दी साहित्य संस्थान (उत्तरप्रदेश) द्वारा पुरस्कृत।

(4) वर्ष 1985 एवं 1989 में हिन्दी और पंजाबी अकादमियों द्वारा श्रेष्ठ कहानी संग्रह '51 कहानियाँ' (हिन्दी) तथा 'सहमे हुए' (पंजाबी) के लिए पुरस्कृत।

(5) वर्ष 1990 में साहित्यिक उपलब्धियों के लिए साखा पुरस्कृत।

(6) वर्ष 1993 में समन्वय सारस्वत पुरस्कृत।

(7) वर्ष 2000 में इंस्टीट्यूट ऑफ पंजाबी लैंगुएज एण्ड कल्चर (लाहौर) द्वारा कहानी पुरस्कृत।

इस तरह महीप सिंह को साहित्य में मान,सम्मान एवं पुरस्कार मिले है।

2.10 महीप सिंह की विदेश यात्राएँ एवं अन्य कार्य

महीप सिंह ने अनेक साहित्यिक और सांस्कृतिक आयोजनों के संदर्भ में अनेक बार विदेश की यात्रा की है। इस तरह के प्रतिनिधि मंडलों में उन्होंने अपने देश का सफलतापूर्वक प्रतिनिधित्व किया है -

विदेश यात्राएँ

(1) वर्ष 1974 में जापान में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में।

(2) वर्ष 1974 और 1975 में हांगकांग।

(3) वर्ष 1980 में पंजाबी के लोकप्रिय सूफी संत सैय्यद वारस शाह के उर्स में भाग लेने वाले लेखकों के प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया और लाहौर के नेशनल सेन्टर में आयोजित समारोह की अध्यक्षता की।

(4) ओटावा (कनाडा) में आयोजित द्वितीय विश्व पंजाबी कांफ्रेंस में भाग लिया और वहाँ कुंजीवत भाषण प्रस्तुत किया।

(5) वर्ष 1983 में बैंकाक (थाईलैंड) में तृतीय विश्व पंजाबी सम्मेलन का संस्था के सचिव के रूप में संयोजन किया।

(6) वर्ष 1993 में दिल्ली में आयोजित कांफ्रेंस को महासचिव के नाते आयोजित किया और 1997 में इसी संस्था के अध्यक्ष के नाते मिलवाकी (अमेरिका) में पांचवें अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन की व्यवस्था की।

(7) वर्ष 1990 में एशियन कल्चर फोरम ओन डवलपमेंट नामक संस्था द्वारा चिंगमाई (थाईलैंड) में 'धार्मिक कट्टरतावाद की चुनौतियाँ' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में भाग लिया।

(8) अप्रैल 1999 में वैंकूवर (कनाडा) की अनेक संस्थाओं द्वारा खालसा जन्म की त्रिशती के आयोजनों में भाग लेने के लिए विशेष रूप से आमंत्रित किया गया।

(9) सितम्बर 1999 में लंदन में आयोजित छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में भाग लिया। वहाँ उन्हें हिन्दी भाषा और साहित्य की विशिष्ट सेवा के लिए सम्मानित किया गया।

(10) जुलाई 2000 में इस्लामाबाद (पाकिस्तान) में आयोजित दक्षिण एशिया मीडिया कांफ्रेंस में प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

(11) फरवरी 2001 में मारीशिस में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी के अवसर पर वहाँ के लेखकों से विचार-विमर्श और विचारों का आदान-प्रदान के लिए भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा कुछ अन्य लेखकों के साथ उन्हें उस देश भेजा गया।

(12) जनवरी 2002 में दक्षिण एशिया मीडिया कांफ्रेंस (काठमांडू) के भारतीय प्रतिनिधि के रूप में भागीदारी।

अन्य कार्य

(1) सम्पादन कार्य

महीप सिंह ने सबसे पहले सन 1964 में 'आधार' पत्रिका का 'सचेतन कहानी विशेषांक' संपादित कर कहानी में 'सचेतन दृष्टि' को व्याख्यायित किया। सन् 1966 में उनके संपादकत्व में 'संचेतना' का प्रकाशन आरंभ हुआ। 18 वर्ष तक साहित्यिक त्रैमासिक के रूप में प्रकाशित होने के पश्चात वह 5 वर्ष तक (1986 से 1990) मासिक रुप में प्रकाशित हुई।

इस समय यह त्रैमासिक रुप से प्रकाशित हो रही है। साहित्य की नवीनतम प्रवृतियों, ज्वलंत प्रश्नों और विचारोत्तेजक मुद्दों पर व्यापक चर्चा के कारण 'संचेतना' का देश के साहितियक बौद्धिक से भी जुड़े हुए हैं। उन्होंने समसामयिक, राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक समस्याओं पर देश के लगभग सभी दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्रों में बड़े मौलिक और विचारोत्तेजक लेख लिखे हैं, और निरन्तर लिखे हैं।

(2) दूरदर्शन

महीप सिंह जी दूरदर्शन से भी लम्बे समय से जुड़े हुए हैं। सन् 1966 से उन्होंने वर्षो तक साहित्यिक कार्यक्रम 'पत्रिका' का संयोजन किया है तथा अनेक चर्चाओं में भाग लिया है। दूरदर्शन के लिए उन्होंने धारावाहिक 'लोक-लोक की बात' की कहानी, संवाद और पटकथा लिखी है, जो दूरदर्शन के प्राइम चैनल पर 1989 में तेरह कड़ियों में दिखाया गया। उनकी कहानियों पर आधारित एक धारावाहिक 'रिश्ते' का ह्रषिकेश मुखर्जी ने दूरदर्शन के लिए निर्देशन किया। यह धारावाहिक 'राष्ट्रीय नेटवर्क' पर जुलाई, अगस्त और सितम्बर 1991 में दिखाया गया। कुछ वर्ष पूर्व उन्होंने अमेरिका और कनाडा में 1913-1915 के मध्य उभरे गदर आन्दोलन पर आधारित 'गदर की गूंज' धारावाहिक की कहानी, संवाद और पटकथा लिखी। इस समय वे महाराजा रणजीत सिंह के जीवन पर आधारित लम्बे धारावाहिक लिखने में लगे हुए थे।

(3) आकाशवाणी

आकाशवाणी में महीप सिंह वर्षो से जुड़े हुए रहे हैं। आकाशवाणी में उनकी वार्ताएं, रूपक और कहानियाँ निरन्तर प्रसारित हुई हैं।

(4) संस्थाएँ

(1) वे 'पंजाबी राइटर्स को-आपरेटिव सोसायटी लिमिटेड' के अध्यक्ष रहे हैं। इस समिति ने इनकी अध्यक्षता में अब तक एक सौ पचास से ज्यादा पुस्तकों का प्रकाशन किया है।

(2) महीप सिंह लेखकों के को-आपरेटिव आधार पर पुस्तकें छपवाने के लिए लेखकों के 'को-आपरेटिव आन्दोलन' के संयोजन में अन्वेषक के रूप में भी कार्य कर चुके हैं।

(3) वर्ष 1978 में उन्होंने अखिल भारतीय लेखक संस्थान की 'भारतीय लेखक संगठन' नाम से नींव रखी। महीप सिंह इस संगठन के प्रधान सचिव तथा विष्णु प्रभाकर इसके अध्यक्ष बने।

2.11 महीप सिंह की संचेतना का सफर

स्वतंत्रयोतर हिंदी कहानी में कुछ गतिशीलता एवं रचनाधर्मिता का प्रयास होता रहा है। जिसमें मूल्य संकट, यथार्थ अभिव्यक्ति, प्रगतिशीलता जैसे प्रयोगों की भरमार रही है। संचेतन कहानी के प्रादुर्भाव से पूर्व नई कहानी का प्रभाव था और उसमें अजनबीपन,अकेलापन,विधटन संत्रास जैसी अवधारणाओं का निरुपण पाया जाता था। इन बातों से हिन्दी साहित्य की नई पीढ़ी ऊब चुकी थी। ठीक इसी मौके पर महीप सिंह ने अपने साहित्य के माध्यम से मूल्य-संकट को अभिव्यक्त करने का नूतन अभिगम अपनाया। महीप सिंह अपने व्यक्तित्व और सोच के अनुकूलन ही सचेतन दर्शन को एक जीवन दृष्टि मानते है। "सचेतन एक दृष्टि है। वह दृष्टि, जिसमें जीवन जिया भी जाता है, और जाना भी जाता है। अपने संक्रांति काल में चाहे हमें जीवन अच्छा लगे या बुरा लगे चाहे उसे घुट-घुट कर पीकर हमें तृप्ति प्राप्त हो, चाहे नीम के रस की तरह हमें उसे आंखे मूंदकर निकलना पडे। किन्तु जीवन से हमारी संपृकित छूटती

नहीं।"**15** सचेतन कहानी की नींव इसी धरातल पर निर्मित है। सचेतन कहानी की सबसे पहली चर्चा दिल्ली में 'मनीषा' की ओर से आयोजित कहानी गोष्ठी में उठाई गई थी। उसके बाद मनहर चौहाण, धर्मेन्द्र गुप्त,जगदीश चतुर्वेदी, श्याम परमार, राजकुमार भमर, आनन्द प्रकाशन जैन, वेद राही सुखवीर, कमल जोशी, कुलभूषण आदि कहानीकारों ने 1965 में आधार त्रैमासिक पत्रिका की ओर से 'सचेतन कहानी विशेषांक' प्रकाशित किया। जिसमें बीस कहानियों और प्रतिष्ठित लेखकों के लेख प्रकाशित हुए थे। वास्तव में 'सचेतन कहानी विशेषांक' ने हिन्दी कहानी इतिहास में सकारात्मक परिवर्तन कर दिया। जिसकी ओर तत्कालीन आलोचना एवं पाठकों का विशेष ध्यान आकर्षित कर सचेतन दृष्टि का स्वीकार कर उस दृष्टि को समझने-परखने के लिए विवश भी किया। इस प्रकार सचेतन कहानी आंदोलन को संचेतना पत्रिका ने ही अलग पहचान दिलाई है।

सन 1966 से 1984 तक संचेतना पत्रिका त्रैमासिक स्वरूप में प्रकाशित होती रही। 1985 से 1989 तक चार साल के लिए संचेतना मासिक रुप में पाठकों के सामने आई। इन चार सालों में संचेतना पत्रिका के प्रकाशन को काफी आर्थिक घाटा झेलना पड़ा परिणामतः सन 1989 से 1994 तक पांच साल के लिए पत्रिका का प्रकाशन बंद हुआ। बाद में उसका त्रैमासिक स्वरुप में पुनः प्रकाशन शुरू हुआ जो आज तक नियमित चल रहा है। संचेतना का चार दशकों से प्रकाशित होने अपने आप में एक ऐतिहासिक उपलब्धि मानी जाती है। संचेतना साहित्य के अलावा जन-जागृति एवं राजनीति की चहल-पहल और दांव-पेंच को भी समय समय पर प्रकट करती रही है। मूल्यहीनता,राजनैतिक भष्टाचार,दूषित न्यायतंत्र, सांप्रदायिक भेदभाव,अल्प संख्यको की अवहेलना आदि समसामयिक

परिस्थितियों का विश्लेषण एवं विरोध संचेतना के माध्यम से प्रस्तुत हुआ है। यानी संचेतना ने अपना कार्य क्षेत्र सिर्फ सीमित नहीं रखा।

पाठकों के जिज्ञासा के अनुसार संचेतना ने समय-समय पर कुछ विशेषांक भी प्रकाशित किये है। "ये विशेषांक तत्कालीन साहित्यिक आवश्यकताओं को तो ध्यान में रखते ही है साहित्य संम्बधी महत्वपूर्ण प्रश्नों तथा मुद्दों को भी उठाते है, जिससे साहित्य को उसके शिल्प तथा भाषा को एक नया रूप या दिशा मिल सके।"**16** संचेतना के प्रमुख विशेषांक में पहला विशेषांक सितम्बर-1969 में 'दिल्ली कहानी : दो दशक की यात्रा' दूसरा मार्च-1973 में 'विचार कविता विशेषांक' तीसरा मार्च-1982 'दलित विशेषांक' और चौथा दिसम्बर-1982 में 'विष्णु प्रभाकर विशेषांक' विशेष उल्लेखनीय है। इन विशेषांको के माध्यम से सचेतन दृष्टि प्रतिपादित होती है।

*** निष्कर्ष**

महीप सिंह के व्यक्तित्व,साहित्य सृष्टि और दृष्टि में सकारात्मक पहलू साफ झलकते है। महीप सिंह का संपूर्ण जीवन संघर्ष से गुजरा है,फिर भी सामाजिक साहित्यिक एवं राजनैतिक लडाईयों जारी रख जीवन जिया है। जीवन संघर्ष से कही पयालन होना या पीछे हटना उनके धर्म में नहीं है। उनकी साहित्यिक अभिव्यक्ति सहज है फिर भी बखूबी ढंग से अभिव्यक्त हुई है।

कुल मिलाकर महीप सिंह की व्यक्तिगत एवं साहित्यिक लाक्षणिकताएँ साहित्य जगत में अलग मिसाल मानी जाएगी। उनका बहुआयामी व्यक्तित्व और उपलब्धियों दूसरों के दिल में ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा अवश्य उत्पन्न करती है। विनम्रता और शिष्ट व्यवहारिकता अदा करने में कभी अभिमानी नहीं दिखे।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

(1) सुरिन्दर सिंह,करक कलेजे माहि,मखमली दस्ताने में फौलादी पंजा- पृ -101

(2) डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा-संसार- पृ -09

(3) डॉ.महीप सिंह, खूब फल-फूल रहा है धर्म का व्यवसाय, दैनिक जागरण दिल्ली,15 फरवरी 2001

(4) डॉ.महीप सिंह,अवमूल्यन की चपेट में अध्यापन, दैनिक जागरण दिल्ली,30 मार्च 2000

(5) डॉ.गुरुचरण सिंह, कथाकार महीप सिंह -पृ -07

(6) डॉ.महीप सिंह, संस्कृति का अंग बन गए हैं अपशब्द, दैनिक जागरण दिल्ली 7 सितम्बर 2000

(7) वहीं

(8) डॉ.महीप सिंह, साहित्य में अब माफिया पैदा हो गया है, नवभारत, नई दिल्ली 25 जून 2001

(9) डॉ.महीप सिंह, गुट जब गिरोह में बदल जाते है तब चिंता होती है, दैनिक जागरण, दिल्ली 16 जुलाई 2000

(10) डॉ.महीप सिंह, मेरी प्रिय कहानियाँ,1674,भूमिका

(11) डॉ.कमलेश सचदेव, करक कलेजे माहि - पृ - 33

(12) वहीं - पृ -59

(12) वहीं - पृ -47

(13) वहीं - पृ -331

(14) वहीं - पृ -85

(15) वहीं - पृ -289